International Journal of Physical and Social Sciences
Vol.14 Issue 06, June 2024,
ISSN: 2249-5894 Impact Factor: 6.644 UGC Journal Number: 42889
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर पारिवारिक अभियोजन का प्रभाव

प्रतिष्ठा कुमारी
शोधार्थी, मनोविज्ञान संकाय
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

शोध निर्देशकः
प्रोफेसर निशि कान्ति
मनोविज्ञान विभाग, महंत दर्शन दास महिला कॉलेज, मुजफ्फरपुर

सारः

शिक्षा का अर्थ विद्योपार्जन है। शिक्षा पर देश काल तथा समाज का प्रभाव पड़ता है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा का अर्थ व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों एवं योग्यताओं के विकास से है। साधारण बोलचाल की भाषा में शिक्षा का अर्थ स्कूल में प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है जो विद्यालयों में शिक्षक द्वारा पाठ्य सामग्री के माध्यम से प्रदान की जाती है। शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। स्वामी विवेकानंद ने भी शिक्षा का अर्थ बताते हुए कहा है कि मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है। पारिवारिक परिवेश बच्चों को सदैव ही एक जैसा अवसर नहीं प्रदान कर सकते हैं। समुचित वातावरण के अभाव में छात्रों के भीतर प्रतीक्षण हीनता की भावना विकसित होती है।

शिक्षा क्या है? इस विषय पर विभिन्न विद्वानों तथा शिक्षा शास्त्रियों ने अपना विचार व्यक्त किया है। इस पर देश काल तथा समाज का प्रभाव पड़ा है। भारतीय दृष्टिकोण में शिक्षा शब्द की उत्पत्ति 'शिक्षः शिक्षणों' से हुआ है। दूसरे अर्थ में, शिक्षा का अर्थ विद्योपार्जन है।

पश्चिमी विद्वानों ने एजुकेशन शब्द को लैटिन में 'ई', जिसका अर्थ है अंदर से बाहर और 'डुको' जिसका अर्थ है निकलना, से लिया है। अतः, 'एजुकेटम' का अर्थ है अंदर से बाहर की ओर निकालना। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा का अर्थ व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों एवं योग्यताओं के विकास से है।

साधारण बोलचाल की भाषा में शिक्षा का अर्थ स्कूल में प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है जो विद्यालयों में शिक्षक द्वारा पाठ्य सामग्री के माध्यम से प्रदान की जाती है। व्यापक अर्थ में शिक्षा संपूर्ण जीवन तक चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। यह गतिशील है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। शिक्षा मानव समाज की संचित सीख है जिसे परंपरा और परिस्थिति के अनुसार मनुष्य ग्रहण करता है।

गाँधी जी के शिक्षा संबंधी कुछ विचारों को इस रूप में प्रस्तुत किया गया है– ''सा विद्या या विमुक्तये'' – जो मुक्ति के योग्य बनाए वह विद्या, बाकी सब अविद्या। जिसके द्वारा चित्त की शुद्धि न हो, जो मन और इंद्रियों को वश में रखना ना सिखाए, निर्भयता और स्वावलंबन पैदा ना करे, निर्वाह का साधन न बताए, गुलामी से छूटने के और आजाद रहने का हौसला और सामर्थ्य पैदा ना करे, उस शिक्षा में चाहे जितनी जानकारी का खजाना, तार्किक कुशलता और भाषा पांडित्य मौजूद हो वह शिक्षा नहीं है, यह अधूरी शिक्षा है।

International Journal of Physical and Social Sciences
Vol.14 Issue 06, June 2024,
ISSN: 2249-5894 Impact Factor: 6.644 UGC Journal Number: 42889
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शिक्षा के संबंध में एडिसन का ऐसा मानना है कि ''शिक्षा द्वारा मनुष्य के अंतर में निहित शक्तियों तथा गुणों का दिग्दर्शन होता है, जिनको शिक्षा की सहायता के बिना भीतर से बाहर निकाल निकालना नितांत असंभव है।

स्वामी विवेकानंद ने भी शिक्षा का अर्थ बताते हुए कहा है कि मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है। उनकी अभिव्यक्ति आध्यात्मिक है, जिसे गाँधी जी ने भी स्वीकारा है। गाँधी जी शिक्षा को मुक्ति का साधन मानते रहे हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान की कुछ परिभाषाएँ नीचे प्रस्तुत की जा रही हैं–

स्किनर ने शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान के वह शाखा है जो सीखने और सीखाने की प्रक्रिया का अध्ययन करता है।''

क्रो और क्रो ने भी शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''शिक्षा व्यक्तिकारण एवं समाजीकरण की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति की व्यक्तिगत उन्नति तथा समाजोपयोगिता को बढ़ावा देती है।''

जेम्स ड्रीवर के अनुसार ''शिक्षा मनोविज्ञान प्रयुक्त मनोविज्ञानिक नियमों एवं परिणामों के उपयोग से तथा साथ ही साथ शिक्षा के समस्याओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन से संबंद्ध होता है।''

थॉमस ने स्कूल के वातावरण का बच्चों के शिक्षा पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन किया है। कठोर अनुशासन वाले स्कूल के बच्चों में स्कूल से भाग जाने की प्रवृत्ति, बहाना बनाकर ना जाने की प्रवृत्ति, शिक्षकों से झूठ बोलने की प्रवृत्ति जैसे व्यवहार अधिक पाए जाते हैं।

इस संबंध में अन्य मनोवैज्ञानिक द्वारा भी अध्ययन किए गए हैं। कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिक इस प्रकार हैं– फॉरक्यूहर और पैनी (1964), बन बेन रेटी फंच (1972, 1975) और सुटौना (1961), थॉर्नडाइक (1963), श्रीवास्तव (1969), देव पी. और मोहन (1972) इत्यादि।

पारिवारिक परिवेश बच्चों को सदैव ही एक जैसा अवसर नहीं प्रदान कर सकते हैं। इसके अनेक कारण हैं। प्रमुख कारणों में पारिवारिक–सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शिक्षा के अवसर, सामाजिक मान्यताएं इत्यादि का परिगमन किया जा सकता है। एक सामान्य बच्चा अपना सामान्य विकास इस स्थिति में कर सकता है जब उसे स्नेह तथा सहानुभूतिपूर्ण अभाव रहित पर्यावरण मिलता रहे। समुचित वातावरण के अभाव में उसके भीतर प्रतीक्षण हीनता की भावना विकसित होती है तथा एक प्रकार की दुश्चिन्ता पलने और विकसित होने लगती है। इसी मूलभूत चिंता को हार्नी ने व्यक्तित्व विकास के प्रमुख प्रत्यय के रूप में वर्णित किया है।

प्राक्कल्पनाः प्रस्तावित अध्ययन के अंतर्गत पारिवारिक अभियोजन को मापने के लिए पारिवारिक पर्यवेक्षक प्रश्नावली सिंह (1970) का प्रयोग किया गया। यह प्रश्नावली पारिवारिक अभियोजन के आधार पर बच्चों के शैक्षिक विकास पर प्रभाव का सही ढंग से अध्ययन करता है। इस पृष्ठभूमि में या प्रकल्पना की जाती है कि अभियोजित परिवार के बच्चों में अनाभियोजित परिवार के बच्चों की अपेक्षा अधिक अनुकूल अभियोजन पाया जाएगा।

International Journal of Physical and Social Sciences
Vol.14 Issue 06, June 2024,
ISSN: 2249-5894 Impact Factor: 6.644 UGC Journal Number: 42889
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विधिः सर्वेक्षण शोध प्रणाली किसी एक व्यवहार पर किस विज्ञान के अनुशासन की अपनी विशिष्ट प्रणाली नहीं है, बल्कि विभिन्न अनुशासन में इसके व्यापक रूप से प्रयुक्त होने के कारण तथा अपने व्यापक स्वरूप के कारण ही व्यवहार विज्ञानों में विभिन्न प्रकार के शोध उपकरणों में इसका बड़ा महत्व है।

सिंह (1970) ने पारिवारिक अभियोजन को मापने के लिए कूपर (1966) के द्वारा निर्मित मापनी का हिंदी में अनुवाद भारतीय परिवेश के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर किया। इसके आधार पर अभिभावकों का उनके बच्चों के द्वारा मूल्यांकन किया जाता है। यह दो भागों में विभक्त है। एक भाग पिता एवं दूसरा भाग माता के प्रति मूल्यांकन है। माता मापनी तथा पिता मापनी के पृथक–पृथक 0.90 एवं 0.92 प्ररीक्षण एवं पुनः परीक्षण सह–संबंध गुणांक प्राप्त हुए। इसी तरह से अर्थ विच्छेद स्पीयरमैन ब्राउन संशोधित सह–संबंध गुणांक क्रमशः 0.87 और 0.90 प्राप्त हुआ है।

इसके लिए वायसिरियस सह–संबंध विधि का उपयोग किया गया और ऐसे ही पक्षों को सम्मिलित किया गया जिसका सह–संबंध गुणांक 0.52 से 0.82 के बीच के प्रसार की सीमा में हो।

प्रतिदर्शः यह अध्ययन माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के 400 छात्र–छात्राओं को प्रयोज्य के रूप में सम्मिलित कर किया गया, जिनकी आयु सीमा 14 से 18 वर्ष के बीच है।

उपकरणः पारिवारिक अभियोजन को मापने हेतु कूपर (1966) का हिंदी अनुवाद सिंह (1970) का प्रयोग किया गया।

परिणामः पारिवारिक अभियोजन एवं विद्यालय छात्रों का समायोजन– पारिवारिक अभियोजन परिवर्त्य तथा विद्यालय छात्रों के समायोजन के संबंध में यह प्राक्कल्पना किया गया था कि अभियोजित परिवार के बच्चों में अनाभियोजित परिवार के बच्चों की अपेक्षा अधिक अनुकूल अभियोजन पाया जाएगा। 200 छात्र एवं 200 छात्राओं के प्रतिदर्श पर पारिवारिक अभियोजन मापनी सिन्हा (1970) के आधार पर अध्ययन किया गया। दोनों ही समूहों में प्रतिदर्श की संख्या बराबर ही रखा गया, और दोनों ही समूहों के आधार पर अध्ययन किया गया। इसका उल्लेख सारणी संख्या एक में नीचे किया गया है।

सारणी संख्या–1

पारिवारिक अभियोजित–अनअभियोजित छात्र–छात्राओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रा.वि.	मध्यमान की प्र. त्रुटि	मध्यमानों की प्र. त्रुटि	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	200	40.25	19.33	0.21	0.96	4.11	0.01
छात्राएँ	200	36.20	8.15	0.94			

उपर्युक्त सारणी में पारिवारिक अभियोजित तथा अनअभियोजित दोनों ही समूह के पृथक–पृथक प्राप्तांकों के सांख्यिकी तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक अभियोजित समूह का प्राप्तांक मध्यमान 40.25 तथा अनअभियोजित का प्राप्तांक 36.20 पाया गया

है। दोनों ही समूहों से प्राप्त टी अनुपात 4.11 प्राप्त हुआ है, जो 398 डी.एफ. के लिए 0.01 स्तर पर सार्थक प्रमाणित हो रहा है। अतः, निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि ऊपर वर्णित प्राक्कल्पना सत्यापित हो रही है।

पूर्ण प्रतिदर्श के पारिवारिक अभियोजन प्रतिदर्श संख्या 400 और विद्यालय अभियोजन पूर्ण प्रतिदर्श संख्या 400 के बीच प्रोडक्ट मोमेंट सह–संबंध विधि का चालान किया गया। इस जांच के आधार पर दोनों ही चों के बीच 0.45 सह–संबंध गुणांक प्राप्त हुआ जो 398 डीएफ के लिए 0.01 स्तर पर सार्थक प्रमाणित हो रहा है। यह सह–संबंध गुणांक दोनों ही चरों के बीच धनात्मक संबंध को प्रदर्शित करता है (गैरेट, 1955, सारणी जे, पृष्ट 439)। अभियोजित परिवार के बच्चों में अनअभियोजित परिवार के बच्चों की अपेक्षा अधिक अनुकूल अभियोजन का प्रभाव उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। पारिवारिक अभियोजन का शैक्षिक विकास पर सार्थक सह–संबंध पाया गया है। पारिवारिक अभियोजन का प्रभाव जनसंख्या में सामान्य वितरण प्रणाली पर भी देखा जा सकता है, जो प्रमाणित होता है। पारिवारिक अभियोजन का बच्चों के विद्यालीय शिक्षा से लेकर सर्वांगीण विकास पर अनुकूल प्रभाव पाया जाता है। वर्तमान अध्ययन इसकी पुष्टि करता है।

References

1. Adison. Basic Principles of Education. Omega Publications, New Delhi, 110002.
2. Skinner (1962). Essentials of Educational Psychology, 162, p. 3.
3. Crow and Crow (1954). Educational Psychology (1954), p.10.
4. James, Drever (1964). The Penguin Dictionary of Psychology, p. 79.
5. Thomas, Chafts (1986). Southern Methodist Perkins School of Valves as Predictors of Social Activists Behaviour, Human Relations, Vol. 39(3), p. 179-193.
6. Sinha, A. K. (1970). A Cross Validation of Cooper's Parent Evaluation Scale on the Indian Sample, Indian Psychological Review, 6, 112-118.
7. Srivastava, A. K. (1968). Study Habits and Other Achievement, Journal of Genetic and Applied Psychology, 248-70.
8. Deo, P. and Mohan, A. (1972). Patterns of Academic Achievement, Indian Educational Review, 7(2), 101-116.
9. Thorndike, R. L. (1963). The Concept of Over and Under Achievement, Bureau of Publications, Teachers Training, Columbia University, New York.